IJAER/May-June 2019/Volume-7/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

छात्रों के नैतिक मूल्यों एवम लक्ष्यों को प्राप्त करने में सामाजिक कार्य का महत्व/ भूमिका।

विजय सिंह रौतेला
शोध छात्र
यूनिवर्सिटी ऑफ़ इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी

डॉ तृप्ति सिंह
शोध पर्यवेक्षक
यूनिवर्सिटी ऑफ़ इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी

सार

छात्रों के नैतिक मूल्यों सामाजिक कार्य ज्ञान के बारे में समझ, योगदान और ज्ञान विकास की प्रक्रिया में आने वाली बाधाओं का पता लगाया गया। भारत के दस राज्यों के पंद्रह सबसे पुराने ISWE को उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण पद्धति का उपयोग करके डेटा संग्रह के लिए चुना गया था। 15 ISWE के प्रमुख, दो साल से अधिक के अनुभव वाले 105 सामाजिक कार्य शिक्षक और नौ वरिष्ठतम ँ इस अध्ययन के उत्तरदाता थे। ISWE और SWE के प्रोफाइल का अध्ययन करने के लिए मात्रात्मक पद्धति का उपयोग किया गया था। गहन साक्षात्कार और साक्षात्कार गाइड के माध्यम से ओपन एंडेड प्रश्नों का उपयोग करके गुणात्मक डेटा प्राप्त किया गया था। डेटा का विश्लेषण करने के लिए ज्ञान के सिद्धांत, भूमिका सिद्धांत और महत्वपूर्ण सिद्धांत से युक्त सैद्धांतिक ढांचे का उपयोग किया गया था। उच्च शिक्षा संस्थानों से प्रभावी शिक्षण और ज्ञान विकास के लिए बुनियादी सुविधाओं के कुछ न्यूनतम मानकों की अपेक्षा की जाती है। भारत में सामाजिक कार्य शिक्षा को मजबूत करने के लिए आईकेबी के विकास का मार्गदर्शन करने के लिए एक मॉडल तैयार किया ।

अत :कहा जा सकता है कि "मूल्य शिक्षा छात्रों के जीवन के लिए पक्षों, मान्यताओं, गुणों, आदर्शों से सम्पृक्त वह शैक्षिक संगठन है ।

मुख्य शब्द "मूल्य शिक्षा , पाठ्यचर्या , शिक्षाशास्त्र स्वदेशीकरण, सामाजिक कार्य ।

प्रस्तावना

भारतीय वास्तविकता और भारत में सामाजिक कार्य शिक्षा का विकास

एक प्रसिद्ध भारतीय समाजशास्त्री सिंह (2006) ने भारतीय समाज की वास्तविकता को निम्नलिखित तरीके से दर्शाया। एक राष्ट्र के रूप में, भारत सांस्कृतिक विशेषताओं में बहुत विविध है। पश्चिम से प्रभावित, यह कई राजनीतिक विचारधाराओं के साथ बहुलवादी और लोकतांत्रिक है। नतीजतन, भारतीय समाज कार्य पेशेवरों को एक अत्यंत जटिल वास्तविकता का सामना करना पड़ रहा है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर और भीतर कई सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और यहां तक कि भौगोलिक कारकों की परस्पर क्रिया होती है। भारत के भीतर लोग जातीय, भाषाई, सांस्कृतिक, क्षेत्रीय, जाति और धार्मिक आधार पर विभाजित हैं। भारत में 2000 से अधिक जातीय समूह और उप समूह हैं। 4693 समुदाय हैं, जिनमें कई हज़ारों अंतर्विवाही समूह शामिल हैं,

325 कामकाजी भाषाएँ बोलते हैं और 25 अलग–अलग लिपियाँ लिखते हैं। 1.19 बिलियन जनसंख्या आकार के साथ, यह एक बहु–जातीय, बहु–सांस्कृतिक, बहुभाषी और बहु–धार्मिक वातावरण की विशेषता है जो समाज को अत्यधिक विविध बनाता है। जटिलता को जोड़ने के लिए, 72.2 प्रतिशत आबादी लगभग 638,000 गांवों में रहती है और शेष 27.8 प्रतिशत 5100 से अधिक कस्बों और 380 से अधिक शहरी समूहों में रहती है (सिंह 2006 बोधि 2009 में)।

भारत में सामाजिक कार्य और सामाजिक कार्य शिक्षा पर शोध अध्ययन

अनुसंधान अपने प्रशिक्षण की शुरुआत से ही समाज कार्य पेशे का एक हिस्सा था। समाज कार्य अनुसंधान सामाजिक परिस्थितियों, आवश्यकताओं और समस्याओं का अध्ययन है जो समाज कार्य प्रथाओं, नीति नियोजन, प्रशासन, शिक्षा और अनुसंधान का मार्गदर्शन करता है (देसाई 1994)। यह माना जाता है कि हमारे ग्राहकों द्वारा अनुभव की गई विशिष्ट समस्याओं के बारे में हमारा अधिकांश ज्ञान जो प्रकृति में प्रासंगिक और स्वदेशी था, अनुसंधान से आया था (ग्रिनेल, 1993; मैथबोर और स्मिथ, 2001; पाठक 2000)। सामाजिक कार्य ज्ञान का विकास ज्ञान और क्रिया के एकीकरण द्वारा अभ्यास ज्ञान, अभ्यास–आधारित और भागीदारी अनुसंधान, सर्वोत्तम प्रथाओं के प्रलेखन, नीति विश्लेषण और बहु–विषयक और अनुप्रयुक्त सामाजिक विज्ञान ज्ञान में महत्वपूर्ण जांच के आधार पर किया गया था। सामाजिक कार्य अनुसंधान ने समाज कार्य के ज्ञान में आवश्यकता मूल्यांकन, निगरानी और समाज कार्य हस्तक्षेप की प्रभावशीलता और दक्षता के मूल्यांकन के माध्यम से योगदान दिया। इस सामाजिक कार्य ज्ञान को प्रकाशन, दृश्य–श्रव्य सहायता, संगोष्ठियों और सम्मेलनों और जनसंचार माध्यमों के उपयोग के माध्यम से प्रसारित किया जा सकता है।

भारत में शोध अध्ययनों पर एक सर्वेक्षण से पता चला है कि समाज कार्य पेशेवरों द्वारा किए गए अधिकांश अध्ययन क्षेत्र आधारित थे और सामाजिक कार्य शिक्षा और अभ्यास की तुलना में सामाजिक मुद्दों/समस्याओं से संबंधित थे। हालाँकि, भारतीय शिक्षाविदों, छात्रों और विद्वानों द्वारा किए गए सामाजिक कार्य और सामाजिक कार्य शिक्षा से संबंधित कुछ शोध अध्ययन थे। ISWE की वार्षिक रिपोर्टों से यह पता चला है कि सुस्थापित भारतीय ISWE ने प्रासंगिक सीखने के लिए अनुभवजन्य ज्ञान उत्पन्न करने के लिए अपने स्वयं के अनुसंधान केंद्र स्थापित किए थे। ये शोध केंद्र सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों के अनुरोध पर राष्ट्रीय, राज्य और क्षेत्रीय महत्व के मुद्दों की कई शोध परियोजनाएं चला रहे हैं और सामाजिक कल्याण और विकास के लिए विशिष्ट क्षेत्रों में अपनी पहल कर रहे हैं। अनुसंधान के लिए उठाए गए मुद्दे बच्चों, महिलाओं, युवाओं, बुजुर्गों और दलित/आदिवासी और विकलांग लोगों जैसे विभिन्न समूहों और आपदा, शिक्षा, परिवार, स्वास्थ्य, जीवन कौशल, मानसिक स्वास्थ्य, गैर–लाभकारी प्रबंधन जैसे मुद्दों से संबंधित थे। संगठित श्रम, गरीबी, धर्म, पुनर्वास और पुनर्वास, कामुकता और एचआईवी/एड्स, सामाजिक विकास, सतत विकास, शहरी आवास, कल्याण और विकास (जै–1010–2012)। अनुसंधान केंद्रों ने उन लोगों के लिए उन्नत अनुसंधान पद्धति पर एक पाठ्यक्रम भी संचालित किया, जिन्होंने क्षेत्र में काफी अनुभव प्राप्त किया और अनुसंधान अध्ययन में रुचि रखते थे।

ज्ञान विकास में व्यावसायिक संघ का योगदान

व्यावसायिक समाज कार्य संघ सामाजिक कार्यकर्ताओं और समाज कार्य शिक्षकों का प्रतिनिधि निकाय है। यह एक गैर–सरकारी संगठन के रूप में कार्य करता है। यह पाठ्यक्रम की समीक्षा करने, संकाय को फिर से प्रशिक्षित करने, सामाजिक कार्य शिक्षा से संबंधित अनुसंधान करने, शिक्षण सामग्री तैयार करने, शैक्षिक मुद्दों के लिए समर्पित पत्रिकाओं को प्रकाशित करने और परामर्श के माध्यम से प्रशिक्षण संस्थानों को आवश्यक नेतृत्व प्रदान करने के लिए जिम्मेदार है। पेशेवर सामाजिक कार्य की शिक्षा, प्रशिक्षण और अभ्यास में उत्कृष्टता सुनिश्चित करने के लिए, सक्रिय पेशेवर संघों की आवश्यकता है (नानावटी, 1997; एनएपीएसडब्ल्यूआई, 2008)। पेशेवर संघ का एक मुख्य उद्देश्य अनुसंधान अध्ययनों को बढ़ावा देना और समन्वय करना और समय–समय पर सामाजिक समस्याओं, सामाजिक कार्य और सामाजिक कार्य शिक्षा पर क्षेत्रीय संदर्भों में साहित्य के प्रकाशन को प्रोत्साहित करना है। भारत में पेशेवर संघों की स्थापना का विचार पहली बार जेएम कुमारप्पा ने 1961 में रखा था (नानावटी, 1997)।

अध्ययन का उद्देश्य

1) सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए सामाजिक विज्ञान अवधारणा
2) समाज कार्य प्रशिक्षण देते समय सामाजिक कार्य शिक्षक किस प्रकार शैक्षणिक गतिविधियों के आयोजन में शामिल होता हैं।
3) छात्रों में नैतिक मूल्यों में शिक्षा की अवधारणा
4) सामाजिक कार्य प्रशिक्षण पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र
5) भारत में सामाजिक कार्य शिक्षा का विकास

सामाजिक कार्य प्रशिक्षण पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र

किसी भी पेशेवर पाठ्यक्रम का उद्देश्य उस विशेष समाज के संदर्भ में पेशे के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्य और कार्यों को करने में सक्षम जनशक्ति के प्रकार और गुणवत्ता को तैयार करना होना चाहिए (यूजीसी रिपोर्ट 1980)। इस प्रकार एक पेशा अपने सदस्यों को उस अभ्यास के लिए तैयार करता है जो स्पष्ट रूप से परिभाषित है। पाठ्यचर्या डिजाइन समय, स्थान और देश के प्रचलित सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भ से परिचालित है। समाज कार्य शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या विकास व्यावसायिक शिक्षा के बुनियादी घटकों, अर्थात् संदर्भ, उद्देश्य, संरचना, सामग्री, अभ्यास और प्रक्रिया (नानावटी 1990) को परस्पर जोड़ने और एकीकृत करने की एक प्रक्रिया है।

दूसरी यूजीसी समीक्षा समिति (1980) के अनुसार, समाज कार्य प्रशिक्षण के लिए मौजूदा पाठ्यक्रम देश के प्रोफाइल के लिए प्रासंगिक नहीं थे और अभ्यास के लिए शायद ही कोई गुंजाइश थी। उस समय के सामाजिक कार्य पाठ्यक्रम में भारतीय वास्तविकताओं के प्रति प्रतिक्रिया का अभाव था और विकास के संदर्भ में व्यक्ति और समाज की समस्याओं के बजाय सूक्ष्म स्तर पर व्यक्ति, परिवारों और समुदायों की समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने वाले उपचारात्मक, पुनर्वास, अवशिष्ट मॉडल पर जोर दिया। समाज कार्य विशेषज्ञों ने सुझाव दिया कि उपयोगी होने के लिए, वर्तमान सामाजिक वास्तविकताओं का जवाब देने के लिए व्यावसायिक शिक्षा का अभ्यास के साथ एक प्रभावी संबंध होना चाहिए। इसलिए, पेशेवर प्रशिक्षण के इन सभी पहलुओं का एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन आवश्यक महसूस किया गया (देसाई 1981; वर्मा 2003)।

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि पाठ्यक्रम डिजाइन का कार्य एक विशेष कार्य है, यूजीसी ने कुछ संशोधनों के साथ राष्ट्रीय स्तर पर पालन किए जाने वाले विषय पाठ्यक्रम की एक मानक रूपरेखा विकसित करने के लिए सभी विषयों के लिए पाठ्यचर्या विकास केंद्र (सीडीसी) शुरू किया। समाज कार्य शिक्षा के लिए सीडीसी ने 1980 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। यूजीसी द्वारा 1990 में दस वर्षों के बाद प्रकाशित इस रिपोर्ट में प्रत्येक कॉलेज में एक अच्छी तरह से सुसज्जित पुस्तकालय की स्थापना की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया गया था, और सामाजिक कार्य प्रशिक्षण को मजबूत करने के लिए स्थानीय भाषा में मूल साहित्य का अनुवाद करने की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया गया था। स्नातकोत्तर स्तर पर समाज कार्य पाठ्यक्रम में निम्नलिखित व्यापक क्षेत्रों को शामिल करने का सुझाव दिया गया।

1. सामाजिक कार्य पेशा दर्शन और अवधारणाएँ
2. सामाजिक कार्य हस्तक्षेप तरीके और रणनीतियाँ
3. सामाजिक कार्य अनुसंधान
4. सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए सामाजिक विज्ञान अवधारणा
5. मानव विकास और स्वास्थ्य
6. सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक संघर्ष
7. सामाजिक विकास, नीति और योजना

8. फील्डवर्क सहित सामाजिक कार्य अभ्यास (फाइल किए गए दौरे; संरचित अनुभव प्रयोगशाला; अध्ययन दौरा; ग्रामीण शिविर; कार्यशालाएं; समवर्ती क्षेत्र कार्य; ब्लॉक फील्डवर्क)

9. वैकल्पिक पाठ्यक्रम

सामाजिक कार्य शिक्षक– ज्ञान के वाहक के रूप में

सोशल वर्क एजुकेटर का अर्थ एक शिक्षाविद्, संकाय सदस्य या शिक्षक है जो एक निर्धारित सामाजिक कार्य योग्यता रखता है और एक मान्यता प्राप्त सामाजिक कार्य शैक्षणिक संस्थान (एनसीएसडब्ल्यूपीआई बिल 1993) में शिक्षण, अनुसंधान और फील्डवर्क पर्यवेक्षण में लगा हुआ है। सामाजिक कार्य में योग्यता जैसे सामाजिक कार्य में मास्टर (एमएसडब्ल्यू) या सामाजिक कार्य में एमए सामाजिक कार्य शिक्षण पेशे में प्रवेश के लिए पात्रता मानदंड में से एक है। विश्वविद्यालय के नियमों (यूजीसी 2010) के अनुसार कैरियर की प्रगति के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम और पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लेना अनिवार्य आवश्यकताओं में से एक था।

विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में सहायक प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर और प्रोफेसर के पदों पर सीधी भर्ती योग्यता के आधार पर की जाती है। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने जून 2010 को शिक्षक भर्ती और पदोन्नति के लिए एक नया नियम जारी किया था। इस विनियमन के अनुसार, अच्छा अकादमिक रिकॉर्ड, मास्टर स्तर पर 55 प्रतिशत अंक और योग्यता में योग्यता राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट), या एक मान्यता प्राप्त परीक्षा (राज्य स्तरीय पात्रता परीक्षा – एसएलईटी / एसईटी) सहायक प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति के लिए एक पूर्व शर्त थी। उच्च शैक्षणिक योग्यता, जैसे पीएच.डी. संबंधित विषय में, पुस्तकों या शोध/नीति पत्रों के साथ प्रकाशित कार्य के साक्ष्य के साथ अनुसंधान में संलग्न होना एसोसिएट प्रोफेसर और प्रोफेसर (दमीन. ंब.पद) के पद के लिए पात्रता आवश्यकताओं का हिस्सा था। संबंधित विषय में ज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान, प्रमाणिकता द्वारा प्रमाणित, प्रोफेसर की नियुक्ति के लिए पूर्व शर्त के रूप में भी निर्धारित किया गया था (उक्त)।

मूल्य शिक्षा की अवधारणा

मल्य शिक्षाश एक व्यापक एवं विवादग्रस्त सम्प्रत्यय है। विवादग्रस्त इसे इसलिए कहा जा सकता है मल्य शिक्षा के सम्बन्ध में मूल्यविदों में मतैक्य नहीं हो पाया है, न ही मूल्य शिक्षा की कोई धरातल ही मिल सका है। मूल्यों की सूची, उनके शिक्षण, पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में अभी तक मित स्थिति बनी हुई है। मूल्य शिक्षा को व्यापक एवं विस्तृत इसलिए कहा जा सकता है कि इस पर व धार्मिक सद्ग्रन्थों, शिक्षाविदों, मूल्य–मीमांसकों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से मूल्य शिक्षा में एक चलच उत्पन्न कर दी है। किन्तु फिर भी मूल्य शिक्षा को विविध विचारों के आलोक में समझने का मास प्रत्येक शिक्षा प्रेमी को करना आज के परिप्रेक्ष्य में परमावश्यक है।

है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन मूल्य, आवश्यकताएँ, पृथक–पृथक हुआ करती हैं इसलिए शिक्षा के उद्देश्य भी भिन्नता युक्त होते है। किन्तु प्रत्येक की आवश्यकता, गुण, आदर्श, लक्ष्य, विशेषता को समाहित

कर शिक्षा अपने उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि को जब व्यवस्थित एवं नियोजित कर लेती है तो समग्र रूप से यही मूल्य शिक्षा कहलाती है। बतमान समय में "मूल्य शिक्षा" को इसी रूप में ग्रहण किया जा रहा है। मूल्य शिक्षा केवल नैतिक, बारात्रक, आध्यात्मिक, धार्मिक शिक्षा नहीं है न केवल सद्गुणों की शिक्षा है, बल्कि यह मनुष्य के जावन को समृद्धिशाली बनाने वाले विविध पक्षों से सम्पृक्त शिक्षा है। मूल्य शिक्षा में शारीरिक, सक, आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक, मानवीय, बौद्धिक, वैज्ञानिक, लोकतांत्रिक, मनोरंजनात्मक ৭वध पक्षाय मूल्य, आदर्श, गुण, उपयोगिता सम्बन्धी चीजें सन्निहित होती हैं। जो आन्तरिक एवं प्रकार के गुणों सराबोर होती हैं। इसी के आधार पर शिक्षा की पूरी व्यवस्था क्रमबद्ध रूप से वसक है। जिसमें शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षणविधि, विद्यालय संगठन, प्रशासन, शिक्षक आदि सभी समाहित होते है। अत रूकहा जा सकता है कि "मूल्य शिक्षा मानव जीवन के लिए पक्षों, मान्यताओं, गुणों, आदर्शों से सम्पृक्त वह शैक्षिक संगठन है जिसको प्रापत कर वह बहुपक्षीय विकास करने और आगे बढ़ने में समर्थ होता है। मूल्य शिक्षा को विविध नामों से जाना है। यथा–मूल्यपरक शिक्षा (Value&oriented education), शैक्षिक मूल्य (Educational values दर्शन (AÛiology) आदि। प्रत्येक के विषय में शिक्षाविद् अलग–अलग दृष्टिकोण रखते हैं। कि इस संदर्भ में केवल मूल्य शिक्षा (Value education) का ही प्रयोग करेंगे।

निष्कर्ष

वरिष्ठ एसडब्ल्यूई के अनुसार, समाज कार्य शिक्षा को मजबूत करने के लिए यह समझना आवश्यक है कि सामाजिक कार्य शिक्षा के ज्ञान के आधार में स्थानीय सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक संदर्भ में निहित स्वदेशी संस्कृति की गहरी जानकारी होती है। उनके अनुसार, ज्ञान के विकास में योगदान देने वाले कारक पेशेवर कैरियर की पसंद, पढ़ने, लिखने और वास्तविकता पर प्रतिबिंबित करने की भाषा क्षमता, लोगों और उनकी संस्कृति को समझने, वैचारिक परिप्रेक्ष्य और मानवीय मूल्यों, समाज की समझ और अभ्यास हासिल करने के लिए हस्तक्षेप, की समझ थे।

हालाँकि, इस समीक्षा ने यह धारणा भी दी कि भारतीय संदर्भ में सामाजिक कार्य ज्ञान के आधार को संस्थागत बनाने के लिए ज्ञान विकास की निरंतरता और संगठित रूप का अभाव रहा है। हालाँकि, समीक्षा से पता चला कि भारतीय समाज कार्य पेशेवरों द्वारा उत्पन्न ज्ञान को व्यवस्थित करने के लिए एक विनम्र शुरुआत थी। इस अभ्यास से सबक यह है कि भारत में अन्य आईएसडब्ल्यूई द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं द्वारा उत्पादित स्वदेशी ज्ञान की गुणवत्ता और योगदान का आकलन करने के लिए समय–समय पर अन्य पत्रिकाओं की भी इसी तरह की समीक्षा किए जाने की आवश्यकता है।

संदर्भ

[1] मेहता, एल. 2005. भारतीय संदर्भ में सामाजिक कार्य विधियों की प्रासंगिकता (इकाई–4), व्यक्तियों और समूहों के साथ सामाजिक कार्य हस्तक्षेप, पूरक पठन सामग्री–7, इग्नू, दिल्ली।

[2] मैथ्यू, जी. 1992. सामाजिक केसवर्क का एक परिचय। बॉम्बेरू टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान।

[3] मटैनी, एम.ए. 1995. अभ्यास के लिए ज्ञान। इंच। मेयर और एम.ए. मतैनी (सं.), द फ़ाउंडेशन ऑफ़ सोशल वर्क प्रैक्टिसरू ए ग्रेजुएट टेक्स्ट (पीपी.59–85)। वाशिंगटन, डी.सी.छौं प्रेस।

[4] मार्श, पी. और ट्रिसेलियोटिस, जे. 1996 श्सोशल वर्कर्सरू देयर ट्रेनिंग एंड फर्स्ट ईयर इन वर्कश इन कोनेली, एन. (एड.) ट्रेनिंग सोशल सर्विसेज स्टाफरू एविडेंस फ्रॉम न्यू रिसर्च, लंदनरू नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर सोशल वर्क , पीपी1–7.

[5] मायादास, एन.एस., और इलियट, डी. 1997. अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक कार्य से सबक। 21वीं सदी (15–28) में एम. रीश और ई. गैम्ब्रिल (एड.) सोशल वर्क में। कैलिफोर्नियारू पाइन फोर्जप्रेस।

[6] मेयो, पी. 1999. ग्राम्सी, फ़्रेयर एंड एडल्ट एजुकेशनरू पॉसिबिलिटीज़ फ़ॉर ट्रांसफ़ॉर्मेटिव एक्शन। लंदन और न्यूयॉर्करू जेड बुक्स।

[7] नारायण, एल. 2001. छात्रों को प्रभावित करने वाले कारक, सामाजिक कार्य करने के लिए प्रेरणा (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, मुंबई विश्वविद्यालय)।

[8] 2008, भारत में सामाजिक कार्य अभ्यास का संदर्भ कुछ अन्वेषण। (संपादकीय)। द इंडियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क, 69 (2) 107–110।

[9] कुलकर्णी, पी.डी. 2000. सामाजिक कार्य के लिए स्कूलों में सामाजिक विज्ञान का शिक्षण। द इंडियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क, 61(2)।

[10]खोरा, एस. 2008. शिक्षक व्यावसायीकरण – शिक्षकों और कक्षा प्रक्रियाओं का एक अध्ययन। मुंबई रू टीआईएसएस.